

गंगा चालोसा

दोहा

जय जय जय जग पावनी, जयति देवसरि गंग।
जय शिव जटा निवासिनी, अनुपम तुंग तरंग॥

चौपाई 1

जय जग जननि हरण अघ खानी।
आनन्द करनि गंग महारानी॥

चौपाई 2

जय भागीरथि सुरसरि माता।
कलिमल मूल दलनि विख्याता॥

चौपाई 3

जय जय जहु सुता अघ हननी।
भीषम की माता जग जननी॥

चौपाई 4

धवल कमल दल मम तनु साजे।
लखि शत शरद चन्द्र छवि लाजे॥

चौपाई 5

वाहन मकर विमल शुचि सोहै।
अमिय कलश कर लखि मन मोहै॥

चौपाई 6

जड़ित रत्न कंचन आभूषण।
हिय मणि हार, हरणितम दूषण॥

चौपाई 7

जग पावनि त्रय ताप नसावनि।
तरल तरंग तुंग मन भावनि॥

चौपाई 8

जो गणपति अति पूज्य प्रधाना।
तिहुँ ते प्रथम गंग अज्ञाना॥

चौपाई 9

ब्रह्म कमण्डल वासिनि देवी।
श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवी॥

चौपाई 10

साठि सहस्र सगर सुत तारयो।
गंगा सागर तीरथ धारयो॥

चौपाई 11

अगम तरंग उठ्यो मन भावन।
लखि तीरथ हरिद्वार सुहावन॥

चौपाई 12

तीरथ राज प्रयाग अक्षैवट।
धरयौ मातु पुनि काशी करवट॥

चौपाई 13

धनि धनि सुरसरि स्वर्ग की सीढ़ी।
तारणि अमित पितृ पद पीढ़ी॥

चौपाई 14

भागीरथ तप कियो अपारा।
दियो ब्रह्म तब सुरसरि धारा॥

चौपाई 15

जब जग जननी चल्यो हहराई।
शंभु जटा महँ रह्यो समाई॥

चौपाई 16

वर्ष पर्यन्त गंग महारानी।
रहीं शंभु के जटा भुलानी॥

चौपाई 17

मुनि भागीरथ शंभुहिं ध्यायो।
तब इक बूँद जटा से पायो॥

चौपाई 18

ताते मातु भई त्रय धारा।
मृत्यु लोक, नभ अरु पातारा॥

चौपाई 19

गई पाताल प्रभावति नामा।
मन्दाकिनी गई गगन ललामा॥

चौपाई 20

मृत्यु लोक जाह्वी सुहावनि।
कलिमल हरणि अगम जग पावनि॥

चौपाई 21

धनि मइया तव महिमा भारी।
धर्म धुरि कलि कलुष कुठारी॥

चौपाई 22

मातु प्रभावति धनि मन्दाकिनी।
धनि सुरसरित सकल भयनासिनी॥

चौपाई 23

पान करत निर्मल गंगा जल।
पावत मन इच्छित अनन्त फल॥

चौपाई 24

पूरब जन्म पुण्य जब जागत।
तबहिं ध्यान गंगा महँ लागत॥

चौपाई 25

जई पगु सुरसरि हेतु उठावहिं।
तइ जगि अश्वमेध फल पावहिं॥

चौपाई 26

महा पतित जिन काहु न तारे।
तिन तारे इक नाम तिहारे॥

चौपाई 27

शत योजनहू से जो ध्यावहिं।
निश्चय विष्णु लोक पद पावहिं॥

चौपाई 28

नाम भजत अगणित अघ नाशै।
विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशै॥

चौपाई 29

जिमि धन मूल धर्म अरु दाना।
धर्म मूल गंगाजल पाना॥

चौपाई 30

तव गुण गुणन करत दुख भाजत।
गृह गृह सम्पति सुमति विराजत॥

चौपाई 31

गंगहि नेम सहित नित ध्यावत।
दुर्जनहूँ सज्जन पद पावत॥

चौपाई 32

बुद्धिहीन विद्या बल पावै।
रोगी रोग मुक्त है जावै॥

चौपाई 33

गंगा गंगा जो नर कहहीं।
भूखे नंगे कबहुँ न रहहीं॥

चौपाई 34

निकसत ही मुख गंगा माई।
श्रवण दाबि यम चलहिं पराई॥

चौपाई 35

महाँ अघिन अधमन कहँ तारे।
भए नर्क के बन्द किवारे॥

चौपाई 36

जो नर जपै गंग शत नामा।
सकल सिद्ध पूरण है कामा॥

चौपाई 37

सब सुख भोग परम पद पावहिं।
आवागमन रहित है जावहिं॥

चौपाई 38

धनि मइया सुरसरि सुखदैनी।
धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी॥

चौपाई 39

ककरा ग्राम ऋषि दुर्वासा।
सुन्दरदास गंगा कर दासा॥

चौपाई 40

जो यह पढ़े गंगा चालीसा।
मिलै भक्ति अविरल वागीसा॥

समापन दोहा 1

नित नव सुख सम्पति लहैं, धरैं गंग का ध्यान।
अन्त समय सुरपुर बसै, सादर बैठि विमान॥

समापन दोहा 2

सम्बत् भुज नभ दिशि, राम जन्म दिन चैत्र।
पूरण चालीसा कियो, हरि भक्तन हित नैत्र॥